INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

Class: X	Department: Hindi	Date -
QB	**Topic:** तीसरी कसम	**Note: Pl. file in portfolio**

प्रश्न **1 – 'तीसरी कसम' फिल्म को सेल्यूलाइट पर लिखी कविता क्यों कहा है ?**

उत्तर - 'तीसरी कसम' फिल्म को सेल्यूलाइट पर लिखी कविता इसलिए कहा जाता है क्योंकि सेल्यूलाइट का अर्थ होता है कि कहानी को कैमरे की सहायता से परदे पर उतारना और इस फिल्म में हिंदी साहित्य की एक दिल को छू लेने वाली कहानी को बड़ी ही सफलता के साथ कैमरे की रील में उतार कर चलचित्र द्वारा प्रस्तुत किया गया था। इस फिल्म में कविता के सभी भाग जैसे- भावुकता, संवेदना और मार्मिकता भरी हुई है इसीलिए कहा जाता है कि 'तीसरी कसम' फिल्म नहीं बल्कि कवि शैलेंद्र द्वारा कैमरे की रील पर लिखी गई एक कविता थी।

प्रश्न 2 – 'तीसरी कसम' फिल्म को खरीददार क्यों नहीं मिल रहे थे ?

उत्तर - 'तीसरी कसम' फिल्म की कहानी में जो भावनाएँ थी उनको समझना किसी मुनाफा कमाने वालों के लिए आसान नहीं था। इस फिल्म में जिस करुणा के साथ भावनाओं को दर्शाया गया था उनको किसी तराज़ू में नहीं तौला जा सकता था इसीलिए 'तीसरी कसम' फिल्म को खरीददार नहीं मिल रहे थे।

प्रश्न 3 – शैलेंद्र के अनुसार कलाकार का कर्तव्य क्या है ?

उत्तर -शैलेंद्र के अनुसार दर्शकों की पसंद को ध्यान में रख कर किसी भी फिल्म निर्माता को कोई भी बिना मतलब की चीज़ दर्शकों को नहीं दिखानी चाहिए। उनका मानना था कि एक कलाकार का यह कर्तव्य है कि वह दर्शकों की पसंद को अच्छा और सुंदर भी बनाने की कोशिश करे।

प्रश्न 4 – फिल्मों में त्रासद स्थितियों का चित्रांकन ग्लोरिफ़ाई क्यों कर दिया जाता है ?

उत्तर - फिल्मों में अगर कहीं त्रासद अर्थात दुखद स्थितियों का वर्णन किया जाता है तो उसको बहुत अधिक बड़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत किया जाता है। दुःख को इतना अधिक भयानक रूप से प्रस्तुत किया जाता है कि वो लोगो को भावनात्मक रूप से कमजोर कर सके और लोग ज्यादा-से-ज्यादा फिल्मों की ओर आकर्षित हो सकें।

प्रश्न 5 – 'शैलेंद ने राजकपूर की भावनाओं को शब्द दिए हैं' - इस कथन से आप क्या समझते हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - राजकपूर को एशिया के सबसे बड़े शोमैन का ख़िताब हासिल था। वे अपनी आँखों से अभिनय करने और अपनी आँखों से ही भावनाओं को दिखाने में माहिर थे। इसके विपरीत शैलेंद्र एक उमदा गीतकार थे जो भावनाओं को कविता का रूप देने में माहिर थे। शैलेंद्र ने राजकपूर की भावनाओं को अपनी कविता और फिल्म की कहानी में शब्द रूप दिए और राजकपूर ने भी उनको बड़ी ही खूबी से निभाया।

प्रश्न 6 – लेखक ने राजकपूर को एशिया का सबसे बड़ा शोमैन कहा है। शोमैन से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर - शोमैन का अर्थ होता है जो अपने अभिनय से लोगो को आकर्षित कर सके, अपने निभाय गए किरदार से जो सबको मनोरंजित करे और अंत तक लोगो को अपने अभिनय के साथ जोड़ कर रखे। ये सारी खूबियाँ राजकपूर में कूट-कूट कर भरी थी इसीलिए लेखक ने राजकपूर को एशिया का सबसे बड़ा शोमैन कहा है।

प्रश्न 7 – 'श्री 420' के गीत - 'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ' पर संगीतकार जयकिशन ने आपत्ति क्यों की ?

उत्तर - 'श्री 420' के गीत - 'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ' पर संगीतकार जयकिशन ने आपत्ति की क्योंकि उनका मानना था कि दर्शकों को चार दिशायें तो समझ आ सकती है परन्तु दर्शक दस दिशाओं को समझने में परेशान हो सकते हैं। सामान्यतः दिशायें चार ही कही जाती हैं और संगीतकार जयकिशन भी चार दिशाओं का ही प्रयोग करना चाहते थे।

(ख) निम्नलिखित प्रशनो के उत्तर (50-60 शब्दों में) दीजिए

प्रश्न 1 – राजकपूर द्वारा फिल्म की असफलता के खतरों के आगाह करने पर भी शैलेंद्र ने यह फिल्म क्यों बनाई ?

उत्तर - राजकपूर जानते थे कि 'तीसरी कसम' फिल्म शैलेंद्र की पहली फिल्म है इसलिए उन्होंने एक अच्छे और सच्चे मित्र के नाते शैलेंद्र को फिल्म की असफलता के खतरों से भी परिचित करवाया। परन्तु शैलेंद्र तो एक सज्जन भावनाओं में बहने वाला कवि था, जिसको न तो अधिक धन-सम्पति का लालच था न ही नाम कमाने की इच्छा। उसे तो केवल अपने आप से संतोष की कामना थी। 'तीसरी कसम' की मुख्य कहानी में जो

भावनाएँ थी वे शैलेंद्र के दिल को छूं गई थी और वे इस फिल्म को बनाने का मन बना चुके थे।

प्रश्न 2 – 'तीसरी कसम' में राजकपूर का महिमामय व्यक्तित्व किस तरह हिरामन की आत्मा में उतर गया। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - 'तीसरी कसम' फिल्म राजकपूर के फ़िल्मी जीवन में अभिनय का वह पड़ाव था, जब राजकपूर को एशिया के सबसे बड़े शोमैन का स्थान मिल चुका था। राजकपूर का अपना खुद का व्यक्तित्व ही कहावत बन चुका था, लोग उनकी मिसाल देने लगे थे। लेकिन 'तीसरी कसम' फिल्म में राजकपूर ने अपने उस महान व्यक्तित्व को पूरी तरह से हिरामन बना दिया था। पूरी फिल्म में राजकपूर कहीं पर भी हिरामन का अभिनय करते हुए नहीं दिखे, बल्कि वे तो खुद ही हिरामन बन गए थे। ऐसा हिरामन जो हीराबाई की फेनू-गिलासी बोली पर फ़िदा हो जाता है , उसकी 'मनुआ-नटुआ' जैसी भोली सूरत पर अपना सब कुछ हारने को तैयार है और हीराबाई के थोड़े से भी गुस्सा हो जाने पर अपने आप को ही दोषी ठहराता हुआ सच्चा हिरामन बन जाता है।

प्रश्न 3-लेखक ने ऐसा क्यों लिखा है कि तीसरी कसम ने साहित्य-रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय किया है ?

उत्तर - 'तीसरी कसम' फिल्म फणीश्वरनाथ रेणु की पुस्तक 'मारे गए गुलफाम' पर आधारित है। शैलेंद्र ने इस साहित्य के सभी पात्रों, भावनाओं, घटनाओं को इस फिल्म में दर्शाया है। कहानी की छोटी-छोटी बारीकियाँ फिल्म में पूरी तरह से दिखाई गई हैं । राजकपूर जानते थे कि 'तीसरी कसम' फिल्म शैलेंद्र की पहली फिल्म है और यह एक भावनात्मक फिल्म है इसलिए उन्होंने एक अच्छे और सच्चे मित्र के नाते शैलेंद्र को फिल्म की असफलता के खतरों से भी परिचित करवाया। परन्तु शैलेंद्र तो एक भावुक कवि थे, जिनको न तो अधिक धन-सम्पति का लालच था न ही नाम कमाने की इच्छा। वे आत्म-तृप्ति के लिए ही यह फिल्म बनाई । इस फिल्म की कहानी में जो भावनाएँ थीं उनको समझना किसी मुनाफा कमाने वालों के लिए आसान नहीं था। इस फिल्म में जिस करुणा के साथ भावनाओं को दर्शाया गया था उनको किसी तराज़ू में नहीं तौला जा सकता था। शैलेंद्र ने मूल कथा को यथा रूप में प्रस्तुत किया था। इन सभी कारणों की वजह से लेखक ने लिखा है कि तीसरी कसम ने साहित्य-रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय किया है।

प्रश्न 4 – शैलेंद्र के गीतों की क्या विशेषताएँ हैं। अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर - शैलेंद ने जो भी गीत लिखे वे सभी लोकप्रिय गीत थे । शैलेंद्र ने कभी भी झूठे रंग-ढ़ग या दिखावे को नहीं अपनाया। वे अपने गीतों में भावनाओं को अधिक महत्त्व देने वाले थे । 'मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इंग्लिस्तानी, सर पे लाल टोपी रुसी, फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी' -यह गीत शैलेंद्र ही लिख सकते थे, क्योंकि इसमें सच्ची भावना झलक रही है। उनके गीत नदी की तरह शांत तो लगते थे परन्तु उनका अर्थ समुद्र की तरह गहरा होता था। उनका मानना था कि एक कलाकार का यह कर्तव्य भी है कि वह दर्शकों की पसंद को अच्छा और सुंदर भी बनाने की कोशिश करे।

प्रश्न 5 – फिल्म निर्माता के रूप में शैलेंद्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ?

उत्तर - 'तीसरी कसम' फिल्म शैलेंद्र की पहली और आखरी फिल्म थी। शैलेन्द्र को न तो अधिक धन-सम्पति का लालच था, न ही नाम कमाने की इच्छा। उन्हें तो केवल अपने आप से संतोष की कामना थी। इस फिल्म में जिस करुणा के साथ भावनाओं को दर्शाया गया था उनको किसी तराज़ू में नहीं तौला जा सकता था। शैलेंद्र ने राजकपूर और वहीदा रहमान की भावनाओं को शब्द दिए हैं। उनका मानना था कि फिल्म निर्माता को कोई भी बिना मतलब की चीज़ दर्शकों को नहीं दिखानी चाहिए। एक कलाकार का यह कर्तव्य भी है कि वह दर्शकों की पसंद को अच्छा और सुंदर भी बनाने की कोशिश करे। शैलेंद ने जो भी गीत लिखे वे सभी बहुत पसंद किये जाते रहे है। शैलेंद्र ने कभी भी झूठे रंग-ढ़ग या दिखावे को नहीं अपनाया। 'तीसरी कसम' फिल्म फणीश्वरनाथ रेणु की पुस्तक 'मारे गए गुलफाम' पर आधारित है। शैलेंद्र ने इस साहित्य के सभी पात्रों, भावनाओं, घटनाओं को सफलतापूर्वक दर्शाया है। कहानी का एक छोटे-से-छोटा भाग, उसकी छोटी-से-छोटी बारीकियाँ फिल्म में पूरी तरह से दिखाई गई है।

प्रश्न 6 – शैलेन्द्र के निजी जीवन की छाप उनकी फिल्म में झलकती है-कैसे ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - शैलेन्द्र के निजी जीवन की छाप उनकी फिल्म में झलकती है। शैलेंद्र ने कभी भी झूठे रंग-ढ़ग या दिखावे को नहीं अपनाया। वे अपने गीतों में भावनाओं को अधिक महत्त्व देने वाले थे । वे चाहते थे कि दर्शकों की पसंद को ध्यान में रख कर किसी भी फिल्म निर्माता को कोई भी बिना मतलब की चीज़ दर्शकों को नहीं दिखानी चाहिए। उनका मानना था कि एक कलाकार का यह कर्तव्य भी है कि वह दर्शकों की पसंद को अच्छा और सुंदर भी बनाने की कोशिश करनी चाहिए। उनके गीत नदी की तरह शांत तो लगते

थे परन्तु उनका अर्थ समुद्र की तरह गहरा होता था। इसी विशेषता को उन्होंने अपनी जिंदगी में भी अपनाया था और अपनी फिल्म में भी इसी विशेषता को साबित किया था।

प्रश्न 7 – लेखक के इस कथन से कि 'तीसरी कसम' फिल्म कोई सच्चा कवि-हृदय ही बना सकता था, आप कहा तक सहमत हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - शैलेंद्र ने ऐसी फिल्म बनाई थी जिसे सिर्फ एक सच्चा कवि-हृदय ही बना सकता था क्योंकि इतनी भावुकता केवल एक कवि के हृदय में ही हो सकती है।यह फिल्म कला से परिपूर्ण थी जिसके लिए इस फिल्म की बहुत तारीफ़ हुई थी। इस फिल्म में शैलेंद्र की भावुकता पूरी तरह से दिखाई देती है। इस फिल्म की कहानी में जो भावनाएँ थी उनको समझना किसी मुनाफा कमाने वालों के लिए आसान नहीं था। इस फिल्म में जिस करुणा के साथ भावनाओं को दर्शाया गया था उनको किसी तराज़ू में नहीं तौला जा सकता था। शैलेंद्र के द्वारा लिखे गीतों में सच्ची भावना झलकती है। उनके गीत नदी की तरह शांत तो लगते थे परन्तु उनका अर्थ समुद्र की तरह गहरा होता था। लेखक के इस कथन से कि 'तीसरी कसम' फिल्म कोई सच्चा कवि-हृदय ही बना सकता था, हम पूरी तरह सहमत हैं।

(ग) निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए

1 – .....वह तो एक आदर्शवादी भावुक कवि था, जिसे अपार सम्पति और यश तक की इतनी कामना नहीं थी जितनी आत्म-संतुष्टि के सुख की अभिलाषा थी।

उत्तर - जब राजकपूर ने एक अच्छे और सच्चे मित्र के नाते शैलेंद्र को फिल्म की असफलता के खतरों से भी परिचित करवाया तो शैलेन्द्र ने उनकी बात नहीं मानी क्योंकि शैलेन्द्र एक भावनात्मक कवि थे, जिसको न तो अधिक धन-सम्पति का लालच था न ही नाम कमाने की इच्छा। उसे तो केवल अपने आप से संतोष की कामना थी।

2 – उनका दृढ़ मंतव्य था कि दर्शकों की रूचि की आड़ में हमें उथलेपन को उन पर नहीं थोपना चाहिए। कलाकार का यह कर्तव्य भी है कि वह उपभोक्ता की रुचियों का परिष्कार करने का प्रयत्न करे।

उत्तर - जब संगीतकार जयकिशन ने गीत 'प्यार हुआ, इकरार हुआ है, प्यार से फिर क्यूँ डरता है दिल' की एक पंक्ति 'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ' में आपत्ति जताई थी,और उनका कहना था कि दर्शकों को चार दिशायें तो समझ आ सकती है परन्तु दर्शक दस दिशाओं को समझने में परेशान हो सकते हैं। लेकिन शैलेन्द्र इस पंक्ति को बदलने के लिए तैयार नहीं हुए। वे चाहते थे कि दर्शकों की पसंद को ध्यान में रख

कर किसी भी फिल्म निर्माता को कोई भी बिना मतलब की चीज़ दर्शकों को नहीं दिखानी चाहिए। उनका मानना था कि एक कलाकार का यह कर्तव्य भी है कि वह दर्शकों की पसंद को अच्छा और सुंदर भी बनाने की कोशिश करे।

3 – व्यथा आदमी को पराजित नहीं करती, उसे आगे बढ़ने का संकेत देती है।

उत्तर - शैलेन्द्र के गीतों में सिर्फ दुःख-दर्द नहीं होता था, उन दुखों से निपटने या उनका सामना करने का इशारा भी होता था। और वो सारी क्रिया-प्रणाली भी मौजूद रहती थी जिसका सहारा ले कर कोई भी व्यक्ति अपनी मंजिल तक पहुँच सकता है। उनका मानना था कि दुःख कभी भी इंसान को हरा नहीं सकता बल्कि हमेशा आगे बढ़ने का इशारा देता है।

4 – दरअसल इस फिल्म की संवेदना किसी दो से चार बनाने का गणित जानने वाले की समझ से परे थी।

उत्तर - 'तीसरी कसम' फिल्म की कहानी में जो भावनाएँ थी उनको समझना किसी मुनाफा कमाने वालों के लिए आसान नहीं था। इस फिल्म में जिस करुणा के साथ भावनाओं को दर्शाया गया था उनको किसी तराज़ू में नहीं तोला जा सकता था।

5 – उनके गीत भावप्रवण थे-दुरूह नहीं।

उत्तर - शैलेंद ने जो भी गीत लिखे, वे सभी बहुत पसंद किये जाते रहे है। शैलेंद्र ने कभी भी झूठे रंग-ढ़ग या दिखावे को नहीं अपनाया। वे अपने गीतों में भावनाओं को अधिक महत्त्व देने वाले थे । 'मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इंग्लिस्तानी, सर पे लाल टोपी रुसी, फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी' -यह गीत शैलेंद्र ही लिख सकते थे, क्योंकि इसमें सच्ची भावना झलक रही है। उनके गीत नदी की तरह शांत तो लगते थे परन्तु उनका अर्थ समुद्र की तरह गहरा होता था।

^^^^^^^^^^^^^^^^